अक्टूबर 2025, अंक 10, वर्ष -02

cinemahaul

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन
अजय ब्रह्मात्मज

आवरण: आर वर्क

जन्मशती ऋत्विक घटक

स्मरण
असरानी और सतीश शाह

ऋत्विक घटक, अमिताभ, अलका साहनी, अंबरीश राय चौधरी, कुंदन कुमार चौधरी, जवरीमल्ल पारख, दीप भट्ट, नेत्र सिंह रावत, डॉ सुमित पीवी, यूनुस ख़ान, रविराज पटेल, राकेश कुमार त्रिपाठी, विजय शर्मा, विनोद दास, शशांक दुबे, सूर्यन मौर्य, सैयद एस तौहिद, हितेंद्र पटेल

अक्तूबर 2025

वर्ष 02, अंक 10

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

आवरण विषय: जन्मशती ऋत्विक घटक

कवर: रविराज पटेल

अनुक्रम

मेरी बात 5

कम्युनिस्ट आर्टिस्ट और लोग 8

ऋत्विक घटक

सतीश शाह 27

अजय ब्रह्मात्मज

ऋत्विक घटक : विस्थापन की पीड़ा और करुणा का एक विद्रोही महागायक 30

अमिताभ

हंसोड़ चेहरे के पीछे छिपा गंभीर इंसान- असरानी 37

अमिताभ

A Maverick and A Master 42

Alaka Sahani

Being Ritwik: Anguish on celluloid 54

Amborish Roychoudhury

ऋत्विक घटक और झारखंड 59

कुंदन कुमार चौधरी

ऋत्विक घटक : सिनेमा के मौलिक चिंतक और विभाजन की त्रासदी के फिल्मकार 63

जवरीमल्ल पारख

बेमिसाल अभिनेता थे असरानी 86

दीप भट्ट

ऋत्विक दा से बातचीत 90

नेत्र सिंह रावत

घटक की फिल्में; विभाजन की त्रासदी और सांस्कृतिक जड़ों की तलाश का बयान 102

डॉ. सुमित पी.वी.

भारतीय सिनेमा के असरानी: स्मरण 109

रविराज पटेल

मधुमति- भेद ये गहरा ऋत्विक घटक का 113

यूनुस ख़ान

असरानी और सतीश शाह की याद 119

यूनुस ख़ान

ऋत्विक – एक रचनाकार का नाम 124

राकेश कुमार त्रिपाठी

मैं पोलिटिकल सिनेमा बनाता हूँ 133

विजय शर्मा

भारतीय सिनेमा का अंतःकरण 139

विनोद दास

ना जाने दिन कैसे, जीवन में आए हैं 158

शशांक दुबे

ऋत्विक घटक: एक फ़िल्मकार और शिक्षक 163

सूर्यन मौर्य

ऋत्विक घटक का सिनेमा 174

सैयद एस तौहीद

ऋत्विक घटक (4 नवंबर 1925- 6 फ़रवरी 1976) के शताब्दी वर्ष में उनका स्मरण 184

हितेन्द्र पटेल

मेरी बात

अक्टूबर का महीना मेरे लिए निजी व्यस्तताएं लेकर आता है। इस मैं जन्ममाह की तरह मनाता हूं। मेरा मानना है कि अगर हम अपने जन्म और जीवन का जश्न नहीं मनायेंगे तो फिर क्या फायदा सारे कार्य, मेहनत और उद्देश्यों का। इस अनिवार्य व्यस्तता की वजह से अंक के प्रकाशन में देरी हुई है।

इसके अलावा लगभग 10 दिनों तक अपने जीवन चक्र की वीडियो रिकॉर्डिंग में व्यस्त होने के कारण लेखकों से समय रहते निरंतर आग्रह नहीं कर पाया। ईज़ीन के लिए लेख जुटाना भी एक अभ्यास है। उसमें नियमितता का महत्त्व है। कुछ लेखकों को अंतिम हफ्ते में कॉल कर पाया। इस कारण विलंब तो होना ही था। वह हुआ।

ऋत्विक घटक पर केंद्रित अंक की योजना का उद्देश्य यही रहा कि हिंदी में ऋत्विक घटक पर कुछ आरंभिक चर्चा हो। मेरी कभी ऐसी मंशा और लालसा नहीं रही कि मेरे प्रयास ही प्रथम हों। सबसे जरूरी है कि हम अपने प्रयास में पूरी ईमानदारी बरतें। और फिर लेखक मित्रों का सहयोग मिल पाता है या नहीं? यह भी देखना होता है। ऋत्विक घटक पर हिंदी में कम लिखा गया है। बंगाल के तीन ख्यातिलब्ध निर्देशक सत्यजित राय, मृणाल सेन और ऋत्विक घटक में हम पहले दो से तो भली भांति परिचित है। ऋत्विक घटक अपनी जटिलता, राजनीति और मौलिकता से थोड़े दुरुह और मुश्किल फिल्मकार जान पड़ते हैं।

सच्चाई यह है कि अगर उनकी फिल्में थोड़े धैर्य और एकाग्रता के साथ देखी जाएं तो उनकी मौलिकता की गिरहें खुलने लगती हैं। ऐसा होने के बाद उनकी फिल्में आनंदित करने के साथ विरेचन भी करती हैं।

समाजशास्त्र, साहित्य, इतिहास और सिनेमा में बंटवारे के दुख-दर्द के कवरेज का बड़ा हिस्सा देश के पश्चिमी इलाके पर केंद्रित रहा है। यानी पंजाब पर ज्यादा ध्यान दिया गया है। गौर करें तो बंगाल ने पहले देश के अंदर ही आंतरिक विभाजन और फिर भौगोलिक विभाजन से अवसाद की गहन पीड़ा झेली है। बांग्ला साहित्य और सिनेमा में इस अवसाद को पर्याप्त स्थान मिला है। हां, पंजाब की तरह बंगाल के विभाजन के दर्द को राष्ट्रीय महत्त्व नहीं मिल सका।

इस अंक में हमने हास्य अभिनेता असरानी और सतीश शाह का स्मरण किया है। एक हफ्ते में ही दोनों के निधन से हिंदी में हास्य का बड़ा हिस्सा अचानक खाली हो गया। हम आमतौर पर पॉपुलर कलाकारों खासकर हीरो को तो हमेशा याद कर लेते हैं। सहयोगी और चरित्र भूमिकाओं के कलाकारों पर ध्यान नहीं दे पाते। उम्मीद है हमारी यह छोटी कोशिका आपको पसंद आएगी।

और अंत में फिर से दोहराऊंगा कि अधूरापन ही किसी कार्य की पूर्णता का प्राथमिक अभ्यास है। कई बार हम पूर्णता और परफेक्शन की अभिप्सा में योजनाओं को पूरा नहीं होते देख छोड़ देते हैं। हमें डर रहता है कि आधा अधूरा प्रयास पाठकों को संतुष्ट नहीं कर पाएगा। मुझे लगता है कि ;आधा-अधूरा ही पूरा' का संकेत और पहला चरण है।

अब यह अंक आपके स्क्रीन पर दिख रहा है। मुझे उम्मीद है कि इसे आपका प्यार और समर्थन पहले की तरह मिलेगा। मैं अपने लेखकों के साथ नीलाभ श्रीवास्तव और गरिमा सिन्हा को फिर से धन्यवाद देता हूं।

फ़िल्में देखें, फ़िल्में पढ़ें और फ़िल्मों पर लिखें

अजय ब्रह्मात्मज

अक्टूबर 2025

मुंबई